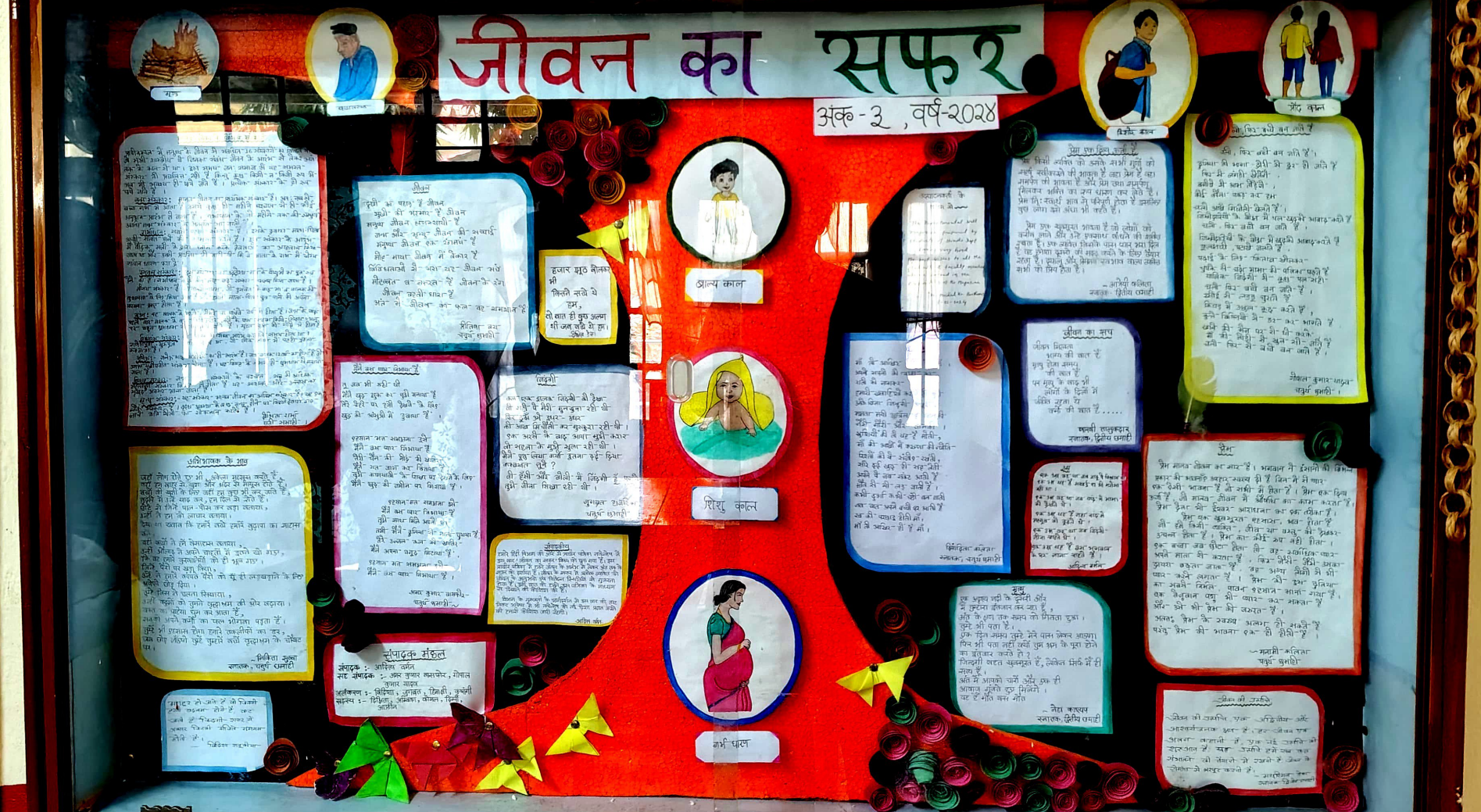

हिंदी विभाग
नवोन्मेष
जीवन का सफर
अंक-3, वर्ष-2024
बाल्य काल
शिशु काल
गर्भ धारण
संपादक मंडल

जीवन का सफ़

संपादकीय

हमारे हिंदी विभाग की ओर से प्राचीर पत्रिका नवोन्मेष में इस बार 'जीवन का सफर' विषय को चुना गया है। इस प्राचीर पत्रिका में हमने जीवन के आरंभ से लेकर अंत तक के सफर को दर्शाया है। जीवन के सफर में प्रत्येक व्यक्ति को जीवन के अनुभवो एवं विभिन्न स्थितियों से गुजरना होता है। इसी बात को हमने इस पत्रिका के माध्यम से दिखाने की कोशिश की है।

विभाग के गुरुजनो के मार्गदर्शन से इस बार की तरह निकट भविष्य में भी नवोन्मेष को नई दिशा प्रदान करने की हमारी कोशिश जारी रहेगी।

आदित्य वर्मन

संपादक मंडल

संपादक :- आदित्य वर्मन

सह संपादक :- अमर कुमार बासफोर, गोपाल कुमार यादव

अलंकरण :- विदिशा, जुगब्रत्त, हिमाक्षी, कृषांगी

सदस्य :- दिक्षिता, अम्बिका, कोमल, हिर्म्पी, आफ्रीन

उद्घाटनकर्ता के
कलम से ~

The Departmental Wall magazine prepared by Students of Hindi Dept is looking very Good. My best wishes to all the students & faculty members who are involved in the Preparation of the Magazine.

Dr. Mridul Kr. Borthakur
8-02-2024

मृत्यु

मानव जीवन के विभिन्न संस्कार

प्राचीनकाल में मनुष्य के जीवन से संबंधित 16 संस्कारों का विधान था जो सभी शास्त्रीय थे जिनका संबंध जीवन के आरंभ से लेकर अंत तक के काल से था। इस समय जन समाज में यह समस्त संस्कार तो प्रचलित नहीं हैं किन्तु कुछ किसी न किसी रूप में अब भी अवश्य ही पाये जाते हैं। प्रत्येक संस्कार के दो रूप पाये जाते हैं।

जन्म संस्कार: मानव जीवन का प्रारंभिक संस्कार है। अत: जब से बच्चा गर्भ में आता है उससे कुछ ही महीने पश्चात से ही कोई अनुष्ठान प्रारंभ हो जाता है। गर्भाधान के नौ महीने तक की सम्पूर्ण अवधि जन्म संस्कार के अंतर्गत आ जाती है।

गर्भाधान: सबसे पहला संस्कार है। इसके द्वारा माता-पिता अच्छी संतति पाने की कामना करते हैं। इस संस्कार के आरंभ में वैदिक मंत्रों के द्वारा ध्वनि करके देवताओं का आह्वान किया जाता था और उनसे प्रार्थना की जाती थी कि वे माता के गर्भ में योग्य संतान धारण करा दें।

पुंसवन संस्कार: इस संस्कार का उद्देश्य गर्भ के शिशुओं का पुत्र रूप होने का है। गर्भाधान के दो-तीन माह बाद संस्कार सम्पन्न किया जाता है।

तीसरा संस्कार है सीमान्तोन्नयन, जो पुंसवन के बाद माँ व बालक की कुशलता के लिए किया जाता है और इसमें माता-पिता पुत्र पाने की अपना कामना प्रकट होता है।

मुंडन: यह बालक के पहले, तीसरे या पाँचवें वर्ष में होता है। जन्म के बाद पहली बार बालक के बाल किसी मंदिर, नदी के पास अथवा किसी सिद्ध स्थान पर बहुत धूमधाम से कटवाये जाते हैं। मुंडन बुआ की गोदी में होता है।

शिक्षारंभ संस्कार: यह बालक की शिक्षा आरंभ करवाते समय होता था। गणेशपूजा, गुरुपूजा आदि मुख्य था, जो लोक भाषा में पटटी पूजना कहलाता है।

जनेऊ:- जनेऊ शब्द यज्ञोपवीत का ही आरंभ है। जब बालक 12 वर्ष का होता है तो उसका यज्ञोपवीत संस्कार होता है। यह विवाह के समान ही धूमधाम से मनाया जाता है।

विवाह संस्कार:- जन्म आदि संस्कारों के पश्चात, सब से अधिक महत्वपूर्ण संस्कार विवाह ही होता है यह आशावाद और उल्लास का सुखद अवसर माना जाता है।

मृत्यु संस्कार:- यह संस्कार मानव जीवन का अंतिम संस्कार है। यह एक शोक संस्कार है। वृद्ध अवस्था के बाद मृत्यु होने पर स्त्रियों द्वारा गाए जाने वाले गीतों का शोकगान करते हैं।

दीक्षिता शर्मा
छठी समाही।

मैंने
तू जब
मैंने खुद
तेरे चेहरे
खुद को

जीवन

दुखो का पहाड़ है जीवन
सुखो की भरमार है जीवन
मनुष्य जीवन क्षणस्थायी है
जन्म और मृत्यु जीवन की सच्चाई
मनुष्य जीवन एक रंगमंच है
मोह माया जीवन में बेकार है
विविधताओ से भरा यह जीवन मंच
मोहब्बत व नफरत है जीवन के रंग
जीवन बहती धारा है
अंत में जीवन का फल वह श्मशान है

प्रीतिषा बरा
चतुर्थ, छमाही

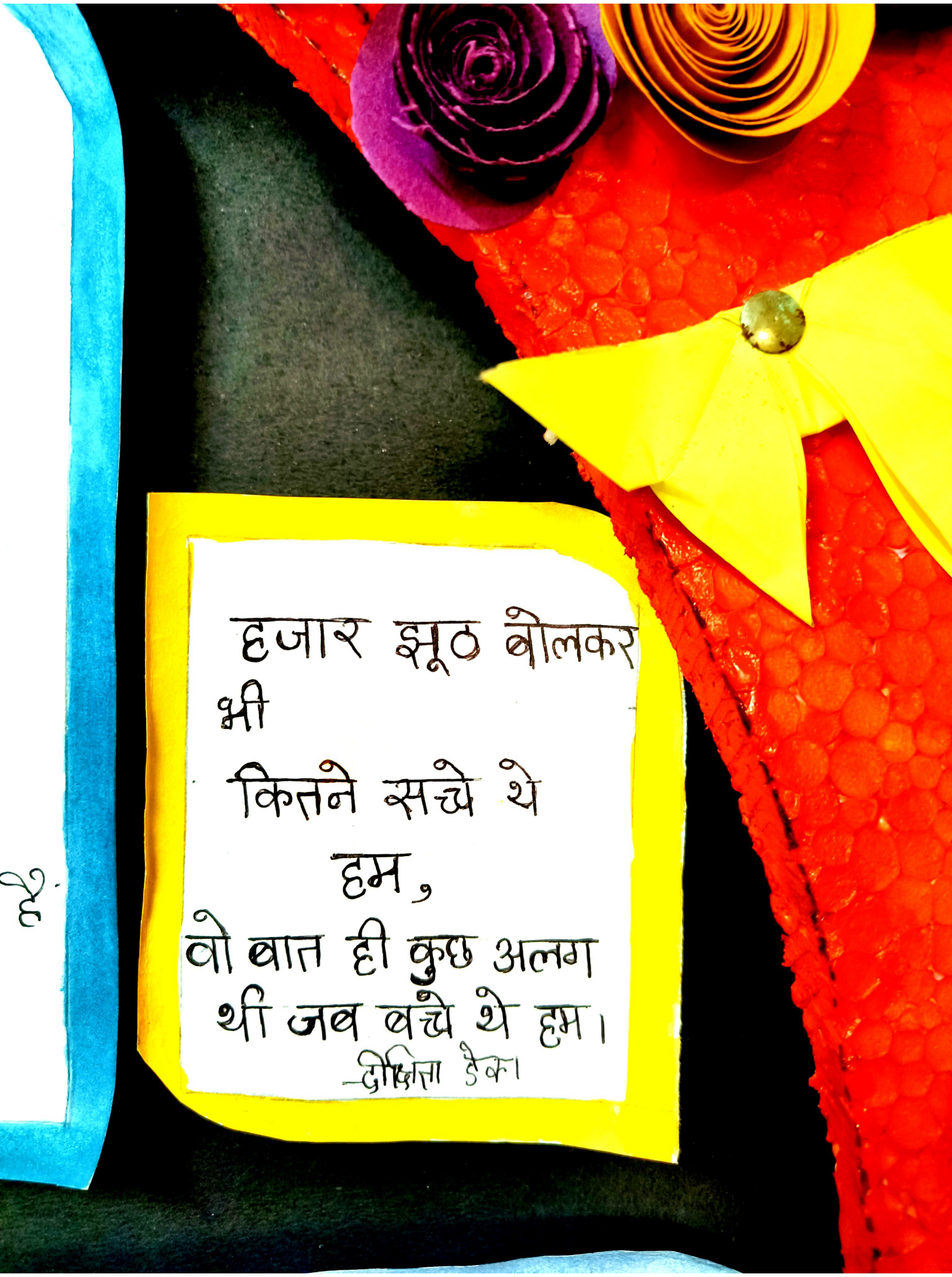
हजार झूठ बोलकर
भी
कितने सच्चे थे
हम,
वो बात ही कुछ अलग
थी जब बच्चे थे हम।
-दीक्षिता डेका

मैंने बस प्यार निभाया है

तू जब भी रूठी थी
मैंने खुद झुक कर तुझे मनाया है
तेरे चेहरे पर हंसी देखने के लिए
खुद को आंसुओं में डुबाया है।

एहसान मत समझना इसे
मैंने बस प्यार निभाया है
तेरी चैन की नींद की खातिर
मैंने रात जाग कर बिताया है,
तुझे कामयाबी के शिखर पर देखने के लिए
मैंने खुद को जमीन पर गिराया है।

एहसान मत समझना इसे
मैंने बस प्यार निभाया है
तुझे साथ मिले अपनों का
तभी मैंने दुनिया से नाता चुराया है,
तेरे उज्जवल कल की खातिर
मैंने अपना वजूद मिटाया है,
एहसान मत समझना इसे
मैंने बस प्यार निभाया है।

अमर कुमार बासकी
चतुर्थ छमाही

अभिभावक के भाव

जहाँ लोग होते हुए भी, अकेला महसूस करते हैं
वहाँ हम बाहर से खुश और अंदर से मायूस होते हैं।
बच्चों की खुशी के लिए जहाँ हम कुछ भी कर जाते हैं,
बुढ़ापे में उन्हें याद कर, हम दिल से रोते हैं।
छोटे से जिन्हें पाल-पोस कर बड़ा बनाया,
उन्हीं ने हम को लाचार बनाया।
देखा था ख्वाब कि हमारे बच्चे हमारे बुढ़ापा का साहस बनें,
वही बच्चों ने हमें बेसाहारा बनाया,
उन्हीं औलाद ने अपने चाहतों में इतने खो गए,
कि वह हमारे कुरबानियों को ही भूल गए।
जिन्हें पैरो पर खड़ा किया,
उन्हें ने हमारे कांपते पैरो को यूँ ही लड़खड़ाने के लिए अकेले छोड़ दिया।
तुम्हे जिस ने चलना सिखाया,
उन्हीं कदमों को तुमने वृद्धाश्रम की ओर बढ़ाया।
वक्त का पाहिया घुम कर आता है,
सबको अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है।
तुम्हें भी एहसास होगा हमारे तकलीफों का डर,
जब छोड़ जाएंगे तुम्हें तुम्हारे बच्चें वृद्धाश्रम के चौखट पर।

~ निकिता सुब्बा
स्नातक, चतुर्थ छमाही

मशहूर हो जाते हैं वो जिनकी
हस्ती बदनाम होती हैं, कट
जाती हैं जिन्दगी सफर में
अक्सर जिनकी मंजिले गुमिनाम
होती हैं।

— बिदिशा शइकीया

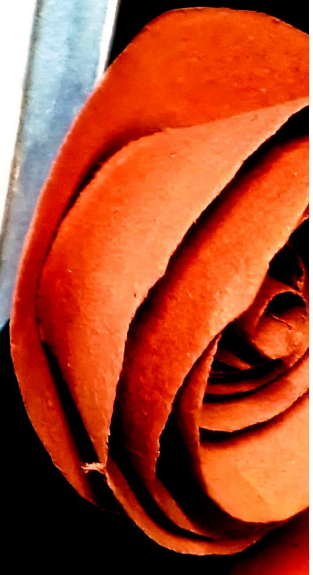

जिंदगी-

कल एक झलक जिंदगी को देखा-
वो राही पे मेरी गुनगुना रही थी-
फिर ढूँढा उसे इधर-उधर-
को आख मिचौली कर मुस्कुरा रही-थी।
एक अरसे के बाद आया मुझे करार
वो सदला के मुझे सुला रही-थी।
मैंने पूछ लिया क्यों इतना दर्द दिया
कम्बख्त तूने ?
वो हँसी और बोली- मैं जिंदगी हूँ पगली
तुझे जीना सिखा रही थी।

जुगब्रत दाजरिका
चतुर्थ छमाही-

मातृत्व

माँ तो आखिर होती है माँ ।
अपने सपनो को त्याग कर,
रातो को जागकर
हमारी ख्वाहिशों करती हो पुरी
उनके बिना जिन्दगी अधूरी,
ममता मयी आँचल है जिनकी
जैसे गौरी और जानकी ।
खुशियों की तो यह है मोती,
माँ की आखों में करुणा की ज्योति
रिश्तों को ये संजोए रखती,
सारे दर्द खुद ही सह लेती
अपने पे जब संकट आती है
मौत से भी लड़ जाती है ।
कभी दुर्गा कभी चंडी बन जाती
जब बात अपने बच्चों पर आती है
रब की परछाई होती माँ,
माँ तो आखिर हो है माँ ।

दिपांदिता कलिता
स्नातक, चतुर्थ छमाही

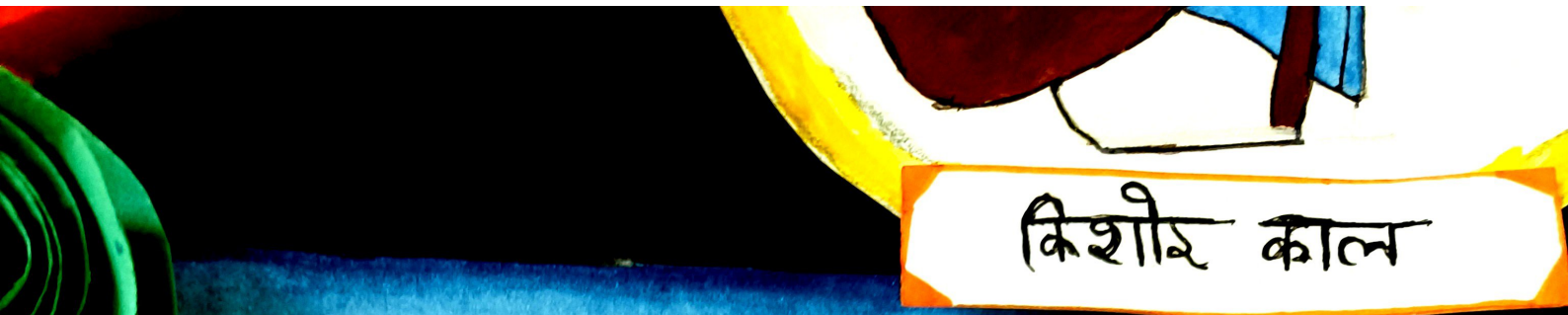

किशोर काल

प्रेम एक दिव्य ऊर्जा है

प्रेम किसी व्यक्ति को उसके सभी गुणों को सहर्ष स्वीकारने की भावना है जहा प्रेम है वहा समर्पण की भावना है और प्रेम तथा समर्पण मिलकर भक्ति का रूप धारण कर लेते है। प्रेम निःस्वार्थ भाव से परिपूर्ण होता है इसलिए कुछ लोग इसे अंधा भी कहते है।

प्रेम एक खुबसूरत भावना है जो लोगों को करीब लाने और उन्हे एकसाथ बांधने की शक्ति रखता है। एक व्यक्ति जिसके पास प्यार भरा दिल है वह हमेशा दूसरो की मदद करने के लिए तैयार रहता है। दयालु और प्रेममय स्वभाव वाला व्यक्ति सभी को प्रिय होता है।

~ आत्रेयी कलिता
स्नातक - द्वितीय छमाही

जीवन का सच

जीवन मिलना
भाग्य की बात है
मृत्यु होना समय
की बात है
पर मृत्यु के बाद भी
लोगों के दिलों में
जीवित रहना ये
कर्मों की बात है.....

बारबी तालुकदार
स्नातक, द्वितीय छमाही

उम्र

एक उम्र वह था जब जादू पे विश्वास थ
एक उम्र यह है सच्चाई पर भी भरोसा
नहीं था ।

एक उम्र वह था जब चांद में मामा
को देखते थे ।

एक उम्र यह है जहा चांद में
महबूब को ढूंढते थे ।

एक उम्र वह था जब जिंदगी
जीना चाहते थे ।

एक उम्र यह है बस भगवान
के घर जाना चाहते हैं ।

आदित्य बर्मन

मृत्यु

एक अदृश्य नदी के दूसरी ओर
मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ,
अंत के क्षण तक समय को गिनता हुआ।
तुम्हे भी पता है।
एक दिन समय तुम्हे मेरे पास लेकर आएगा।
फिर भी पता नहीं क्यों तुम भ्रम के पूरा होने
का इंतजार करते हो?
जिन्दगी बहुत खुबसूरत है, लेकिन सिर्फ मैं ही
सत्य हूँ।
अंत में आपको चारों ओर एक ही
आवाज गूंजते हुए मिलेंगे।
वह हैं मौत बस मौत

~ नेहा काश्यप
स्नातक, द्वितीय छमाही

प्रेम

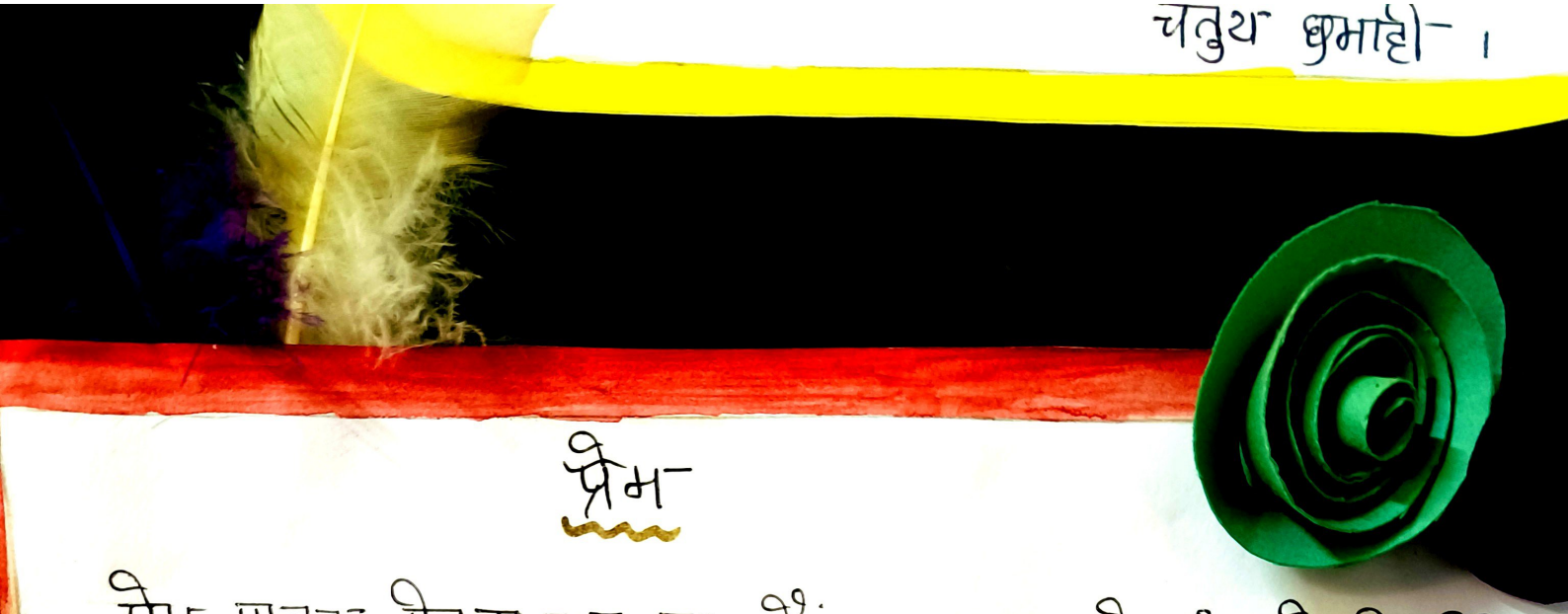

प्रेम मानव जीवन का सार है। भगवान ने इंसानो को विभिन्न प्रकार की भावनाएँ उपहार स्वरुप दी हैं जिन में से प्यार एक ऐसी भावना हैं जो सभी में होता है। प्रेम एक दिव्य ऊर्जा हैं, जो मानव जीवन में औषधि का काम करता है। प्रेम देना भी ईश्वर आराधना का एक तरीका हैं।

प्रेम एक खूबसूरत एहसास, भाव होता है जो हमे किसी व्यक्ति, जीव या वस्तु को देखकर उत्पन्न होता हैं। प्रेम का कोई रुप नही होता। एक बच्चा जब छोटा होता तो वह सर्वाधिक प्यार अपने माता से करता है, फिर जैसे जैसे उसका दायरा बढ़ता जाता है, वह अन्य लोगो से भी प्यार करने लगता है। प्रेम को इस दुनिया का सबसे निर्मल, पावन एहसास माना गया हैं। एक बेजुबान पशु भी प्यार कर सकता है और उसे भी प्रेम की जरुरत है।

अततः प्रेम के स्वरुप अलग हो सकते हैं परंतु प्रेम की भावना एक ही होती है।

~ मनामी कलिता
चतुर्थ छमाही

प्रौढ़ काल

चलो, फिर बच्चे बन जाते हैं

चलो, फिर बच्चे बन जाते हैं।
दुनिया की भाग-दौड़ी से दूर हो जाते हैं
फिर से लंगड़ी खेलेंगे,
बगीचे से आम तोड़ेंगे,
कोई कोना पकड़ कर हम
चलो आँख मिचोली खेलते हैं।
जिम्मेदारियों के बोझ में पल खुद को आजाद करते हैं
चलो, फिर बच्चे बन जाते हैं।
जिम्मेदारियों के बोझ में खुद को आजाद करते हैं
फुलझरी, पटाखे जलाते हैं,
पढ़ाई के लिए किताब खोलकर
चुपके से चंदा मामा की पत्रिका पढ़ते हैं
यांत्रिक जिंदगी से कुछ पल सही
चलो फिर बच्चे बन जाते हैं।
रसोई से लड्डू चुराते हैं
किचड़ में उछल कूद करते हैं,
कुत्ते बिल्लियों से डर कर भागते हैं,
खाने की मेज पर रो धो करके
माँ की लोरी से सो जाते हैं
चलो फिर से बच्चे बन जाते हैं।

गोपाल कुमार यादव
चतुर्थ छमाही।

जीवन की उत्पत्ति

जीवन की उत्पत्ति एक अद्वितीय और आश्चर्यजनक क्षण है। हर जीवन एक अलग कहानी है, एक नई उत्पत्ति की शुरुआत है, यह उत्पत्ति हमें सब कुछ संभालने की तैयारी में रखती है, जीवन के रोमांच से भरपूर करती है।

– मधुस्मिता डेका
स्नातक- द्वितीय छमाही